International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 5.136
Vol.4 No.6 July - Aug 2017

'अनामिका की कविताओं में स्त्री - विमर्श'

Bagwan Niyajoddin Shahajahan
Head Dapt Of Hindi
Uma Mahavidyalaya Pandharpur, Dist- Solapur, 413304(Ms)

शोध सारांश :

आज विमर्श का दौर चल रहा है। विमर्शों के इस दौर में स्त्री - विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय रहा है। हिंदी साहित्य में पिछले दो-तीन दशकों में से स्त्री - विमर्श को लेकर चर्चाएं हो रही है। साहित्यकारों ने स्त्री विमर्श को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। स्त्री विमर्श के हर पहलू को समझने की कोशिश की है। उसी कारण स्त्री - विमर्श का यह रूप आज हमारे सामने हैं। स्त्री - विमर्श स्वाधीनता प्राप्ति के बाद की संकल्पना है, लेकिन बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में यह विचारधारा विस्तृत रूप में फैली। स्त्री - विमर्श नारी की आत्मचेतना, आत्मगौरव, समानाधिकार का दूसरा नाम है।

मुख्य शब्द : स्त्री, विमर्श, अस्तित्व, कविता, आत्मचेतना, स्वाभिमान।

प्रस्तावना :

नारी प्रकृति का अनुपम उपहार है। वह सृष्टि की आधारशीला होने के कारण उसे विधाता की अद्‌वितीय रचना कहा जाता है। नारी समाज, संस्कृति और साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। पितृसत्तात्मक समाज अवस्था के कारण नारी को उसके अधिकारों से वंचित रखा है। उसे केवल एक भोग की वस्तु माना गया है। विश्व में स्त्री मुक्ति के संघर्ष का इतिहास पुराना है। समता, स्वातंत्र्य, समानता का युग है। इसमें नारी स्वतंत्रता का विशेष महत्व है। प्राचीन काल से नारी ने अपने ऊपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार का विरोध किया है। आधुनिक काल में आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक

प्रगति से समाज में परिवर्तन हुआ है। नारी अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत हुई है। तब से समाज में स्त्री विमर्श की शुरुआत हुई है।

उद्देश्य :

1) प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य स्त्री को उसके अस्तित्व के प्रति सजग कराना है।

2) स्त्री - विमर्श पर विचार - विनिमय करना।

3) स्त्री को उसके व्यक्तित्व और अस्मिता से परिचित कराना।

4) स्त्री को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना।

5) स्त्री को आत्मनिर्भर बनाना।

अनामिका स्त्री - विमर्श की प्रबल कवि, उपन्यासकार है। उन्होंने समाज में जो देखा, सहा, भोगा उसे अपने साहित्य में चित्रित किया है। उनका असली विमर्श पर गहन अध्ययन स्त्री - विमर्श को एक नई दिशा प्रदान करता है। स्त्री होने के कारण उनमें स्त्रियों के प्रति संवेदनात्मक लगाव अधिक है।

मैं की चिंता का एहसास स्त्री - विमर्श की पहली शर्त है। अनामिका की कविताएं मैं के प्रति प्रश्न करती है। अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री की जिंदगी, उसका जीवन, मातृत्व, पारिवारिक दायित्व, संवेदनशीलता, मौत और प्यार की सहायता से देखती है। 'मैं एक दरवाजा थी' कविता में स्त्री का व्यक्तित्व बहुत ही मजबूत दिखाया है, जिसमें नायिका अपमान सहकर भी अपने सपने को पूरा करती हैं।

ऐसा माना जाता है कि भारतीय स्त्री अपने भावों, विचारों, आकांक्षाओं और तर्कों से नहीं सोचती है। पुरुष समाज में उसका पालन-पोषण होने के कारण हर क्षेत्र में पुरुषों से पहल करने की अपेक्षा रखती है। अपने अस्तित्व का बोध स्त्री विमर्श की पहली शर्त है। अनामिका की 'उड़ान' कविता में अस्तित्व और अस्मिता बोध देखने को मिलता है-

" किसकी नूरजहां हूं मैं?

इस आंधियारे कमरे में यों

टीन खुरचती आटे की?"[1]

नारी को अक्सर हाउसवाइफ कहा जाता है। समाज और सभ्यता के निर्माण में उसकी भागीदारी को नकारा जाता है और उसे उपेक्षित किया जाता है। स्त्री उपेक्षा उसके जीवन में खालीपन लाती है। अनामिका 'प्रत्यभिज्ञा' कविता में प्रश्न करती है -

" क्या खुद मैं अपनी पड़ोसिन हूं?

क्या मैंने खुद से की है नमस्ते?

क्या मेरे दो हाथ जुड़े हैं कभी

अपने भीतर के उस 'मैं' की खातिर?"[2]

अनामिका की कविताओं में नारी का परित्यक्त्या रूप भी देखने को मिलता है। 'तुलसी का झोला' नामक कविता में अनामिका तुलसीदास को कटघरे में खड़ा करती है -

"सदियों तक मैंने किया इंतजार

आएगा कोई तोड़ेगा टांके गूदड़ के

ले जाएगा मुझको आके।

पर तुमने तो पा लिया था अब राम रतन

इस रतना की याद आती क्यों?"[3]

इस कविता के माध्यम से परित्यक्त्या पत्नी अपने पति को याद दिलाना चाहती है कि रात भी धम घमंडवाली ही थी, जब तुम मिलने के लिए आये थे और सदा के लिए मुझे छोड़ कर चले गए।

आर्थिक रूप से निर्भर होने के लिए आज की स्त्री नौकरी कर रही है। नौकरी करने के साथ - साथ ही वह पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वाह भी पूरी ईमानदारी के साथ करती है। स्त्री के इस दोहरी भूमिका के निर्वाहन का सजीव चित्रण अनामिका ने इस प्रकार से किया है -

समय : सुबह साढे सात, एफ. एम. टाइम

स्थान : सीढ़ी के नीचे आलने घेर कर बनाया गया पूजा -घर

दृश्य : कुर्सी पर दफ्तर की साड़ी। देह पर एक भीगा कुरता,

हाथ में दुर्गासप्तशती।

' या देवी सर्वभूतेषु' सविता, देखो बेटी, जल तो

नहीं रही सब्जी?

'निद्रारूपेण संस्थिता'.... जागा पिंटू, उसे जगाओ, स्कूल बस छूटेगी।

'नमस्तस्यै नमस्तस्यै'.... फोन बज रहा है, उठाओ तो!

मेरा होगा तो कह देना - सी. एल. पर हूँ, आज!

सिर दुख रहा है!

'ऊल जयंती काली -महाकाली,- अखबारवाले भैया, रुक लो!

आती हूँ, कर लूँ हिसाब, कल मिल गई मुझे तनख्वाह।"[4]

यहां पर यह कहना गलत नहीं है कि हर नौकरी पेशा औरत की स्थिति इस प्रकार की है। अनामिका ने इसका चित्रण कर स्त्री की व्यथा को वाणी दी है।

नारी पर सदियों से अनाचार, अत्याचार होते आए हैं। अनामिका ने अपनी कविताओं में हिंसा, अत्याचार और अनाचार का अत्यंत सजीव और मार्मिक चित्र पाठक के सामने प्रस्तुत किया है -

" पीठ नीली

चेहरा पीला

लाल आंखें और

जख्म हरे

कुदरत के सब रंगों की बोतल

उलट - पलट जाती है मुझ पर

उनके आते ही।"[5]

आज की स्त्री विवाह प्रथा से शंकित है। वह विवाह प्रथा को संदेहास्पद दृष्टि से देखती है और उससे प्रश्नचिन्ह लगाती है-

" क्या प्रेम में पडना खटाई में पड़ना है, अमरता?

जो मुझसे प्रेम करेगा

क्या मुझको ले देगा वह उड़नखटोला

या बहला-फुसलाकर

ये मेरे बचे-खुचे पंख भी

खचाखच नोच लेगा?"[6]

बाजारवाद के कारण आज की स्त्रियांए लगातार मुस्कुराते रहने के लिए अभिशप्त है। इसलिए अनामिका हंसी को नए जमाने का घूंघट कहती है। बाजारवाद को अनामिका अपनी कविताओं में इस प्रकार व्यक्त करती है -

"एक दिन आउंगी मैं टी. व्ही. पर

एक अंगूठे की तरह दिखाउंगी देह

दूर से!

काया जब छाया की माया बन जाएगी,

ललकारुंगी शोहदों को तब -

'आज बैल, मुझे मार' हिम्मत है तो आ जा।"[7]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनामिका की कविताओं में स्त्री के विविध रूप देखने को मिलते हैं - परित्यक्ता स्त्री, मौन को तोड़ती स्त्री, अस्मिताबोध के प्रति सजग नारी, सहभागिता के रूप में नारी, विद्रोहिणी के रूप में नारी, सामंजस्य स्थापित करती हुई नारी और दोहरी भूमिका का निर्वहन करती हुई नारी आदि। अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श मुख्यतः देखने को मिलता है। अनामिका भारतीय परिवेश में पारिवारिक और सामाजिक स्थितियों में फंसी हुई नारियों की दुर्दशा का चित्रण करती है। साथ ही इतिहास, पौराणिक कथाओं से लेकर आधुनिक नारी की स्थिति की निष्पक्षता के साथ जाँच करती है।

संदर्भ सूची :

1) अनामिका, दूब- धान, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ 37

2) वही, पृ 102

3) वही पृ 17

4) अनामिका, दूब- धान, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ 50

5) अनामिका खुरदुरी हथेलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ 46

6) अनामिका, अनुष्टुप, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली पृ 51

7) अनामिका, दूब-धान, पृ 70